**डॉ. मीरा कुमारी**

**संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना**

**ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार**

ईमेल आइडी – [kmeera573@gmail.com](mailto:kmeera573@gmail.com)

Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक – 13-08-2020

विषय- वैदिक साहित्य

**ऋग्वेद के छंद**

'ऋक्' शब्द का अर्थ है-' पद्य' l पद्यात्मक रचना वाला होने से ही यह वेद 'ऋग्वेद' कहलाता है। पद्यात्मक रचना होने से ऋग्वेद में अनेक छन्दों का प्रयोग हुआ है, जैसे- गायत्री, अनुष्टुप, त्रिष्टुप, जगती और पंक्ति आदि।

यहां छंद से तात्पर्य है- ‘वर्णों या अक्षरों' की एक निश्चित संख्या। प्रत्येक वैदिक छंद में वर्णों की एक निश्चित संख्या होती है। वैदिक छन्दों में वर्णों की निश्चित संख्या का ही महत्व होता है मात्राओं का नहीं। उदाहरण के लिए, गायत्री छंद में 24 वर्ण होते हैं तथा अनुष्टुप में 32 वर्ण होते हैं। इसी प्रकार भिन्न भिन्न छंदों में वर्णों की संख्या, भिन्न-भिन्न हो जाती है ।

ऋग्वेद में वैसे तो अनेक छन्दों का प्रयोग हुआ है । पंडित राहुल सांकृत्यायन के अनुसार ऋग्वेद में 18 छंद है। किंतु, यहाँ ऋग्वेद में बहुप्रयुक्त केवल 7 छन्दों का परिचय हम दे रहे हैं। ये सात छन्द है -

1. गायत्री
2. उष्णिक
3. अनुष्टुप
4. त्रिष्टुप
5. बृहती
6. जगती
7. पंक्ति

अक्षरों या वर्णों के एक समूह को पाद या चरण कहा जाता है। प्रत्येक पादों की संख्या निश्चित ही रहती है । पाद या चरण के आधार पर, ऋग्वेद के उपर्युक्त सात छन्दों के तीन वर्ग बनते हैं-

1. तीन पाद वाले छंद- गायत्री तथा उष्णिक्।
2. चार पाद वाले छंद- अनुष्टुप, त्रिष्टुप, बृहती और जगती l
3. पांच पाद वाले छंद –पंक्ति l

पादों की संख्या की भांति ही उपर्युक्त सात छन्दों में वर्णो या अक्षरों की संख्या भी निश्चित है, जिसे हम इस प्रकार प्रदर्शित कर सकते हैं-

छंद वर्ण संख्या सहित पाद संख्या कुल अक्षर संख्या

प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ पंचम

|  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| गायत्री | ८ | ८ | ८ | X | X | = २४ |
| उष्णिक | ८ | ८ | १२ | X | X | = २८ |
| अनुष्टुप् | ८ | ८ | ८ | ८ | X | = ३२ |
| बृहती | ८ | ८ | ८ | १२ | X | = ३६ |
| पंक्ति | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | = ४० |
| त्रिष्टुप | ११ | ११ | ११ | ११ | X | = ४४ |
| जगती | १२ | १२ | १२ | १२ | X | = ४८ |

छंदों का क्रम इस प्रकार रखा गया है कि प्रथम छंद गायत्री 24 अक्षरों के बाद आगे के प्रत्येक छंद में चार अक्षर बढ़ते जाने से सातवें छंद जगती तक पहुंचकर अक्षरों की संख्या 48 हो जाती है।

उपर्युक्त छंदों में ही, अक्षरों की निश्चित संख्या में अक्षरों की कमी या वृद्धि हो जाने से, एक ही छंद के अन्य भेद भी हो जाते हैं। यथा-

1. गायत्री- २४ अक्षरों के गायत्री छंद में
2. निवृत्त् गायत्री – १ अक्षर कम हो जाने से उसे निवृत्त गायत्री कहा जाता है ।
3. विराट् गायत्री - २ अक्षर कम हो जाने से उसे विराट गायत्री कहा जाता है, और
4. भुरिक् गायत्री - १ अक्षर के बढ़ जाने से उसे भूरिक् गायत्री कहा जाता है।
5. स्वराट् गायत्री- २ अक्षर बढ़ जाने से उसे स्वराट् गायत्री कहा जाता है।

इस प्रकार एक एक शब्द के अनेक भेद हो जाते हैं।

उपर्युक्त सात छन्द, ऋग्वेद के मूलछन्द कहलाते हैं। ऋग्वेद में सबसे अधिक प्रयोग त्रिष्टुप छंद का हुआ है । उसके बाद दूसरा स्थान गायत्री छंद का है । गायत्री छंद गाने में सर्वाधिक प्रयुक्त होने के कारण ऋग्वेद का प्रमुख छन्द माना जाता है । गायत्री गाने को 'गायत्री साम' कहा गया है। बृहती को छोड़कर उपर्युक्त शेष सभी छंदों का प्रयोग ऋग्वेद में 300 से अधिक बार हुआ है। त्रिष्टुप और गायत्री के बाद ऋग्वेद में सर्वाधिक प्रयोग जगती छंद का हुआ है । चौथे स्थान पर अनुष्टुप छंद है, जिसका प्रयोग आगे चलकर संस्कृत साहित्य में प्रमुखता के साथ हुआ है ।

**वैदिक संतो में संहिता**

वैदिक छंदों में, संहितापाठ में, यदि किसी पाद में एक अक्षर कम हो जाता है, तो उसकी पूर्ति उच्चारण द्वारा कर दी जाती है । उदाहरण के लिए 'वरेण्यम्' जैसे शब्दों को 'वरेणियम' की भांति उच्चारण कर देने से अक्षर संख्या को पूरा कर दिया जाता है।